5:22 PM 0.0KB/s 4G 3G 30
5 b l jain Langik a...

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 दिसम्बर 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

लैंगिक असमानता: समस्याएँ एवं समाधान

प्रो.बनवारी लाल जैन
आचार्य एवं विभागाध्यक्ष
शिक्षा विभाग,
जैन विश्व भारती संस्थान
लाडनूं, राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

पशु, पक्षी आदिम समाज, पिछड़े हुए समाज में असमानताएँ कम होती हैं। शिक्षित, उच्च स्तर के समाज में असमानताएं भेदभाव मिलेगा ही। असमानताओं से ही समाज, सृष्टि का विकास हुआ है। स्त्री-पुरूष, दिन-रात, सुबह-शाम, पूर्व-पश्चिम, शुभ-अशुभ, पक्ष-विपक्ष आदि विपरीत व असमान स्थिति से ही सृष्टि का विकास हुआ है। व्यक्ति की बौद्धिक शारीरिक संरचना, सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक स्थिति ही समान नहीं है फिर कैसे अन्य असमानता को समान किया जा सकता है। सामाजिक जीवन के स्थायित्व, प्रकार्यात्मक हेतु समानताओं और असमानताओं में संतुलन आवश्यक है। प्रस्तुत शोध पत्र में इसी पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

जनगणना 2011 के अनुसार देश की कुल साक्षरता 74.40 प्रतिशत है। पुरूष साक्षरता 82.14 प्रतिशत तथा महिला साक्षरता 65.46 प्रतिशत है। देश में सर्वाधिक साक्षरता वाला राज्य केरल (93.91 प्रतिशत) व न्यनूतम साक्षरता वाला राज्य बिहार (63.82 प्रतिशत) है। सर्वाधिक पुरूष साक्षरता वाला राज्य केरल (96.02 प्रतिशत) व महिला साक्षरता वाला राज्य केरल (91.98 प्रतिशत), न्यूनतम पुरूष साक्षरता वाला राज्य बिहार (73.39 प्रतिशत) व न्यूनतम महिला साक्षरता वाला राज्य राजस्थान (52.66 प्रतिशत) है। साक्षरता के ये आँकड़े देश की वस्तु स्थिति का अवलोकन है।

ग्रामीण नगरीय लिंगानुपात

जनगणना 2011 के अनुसार ग्रामीण लिंगानुपात 947 व नगरीय लिंगानुपात 926 कुल लिंगानुपात 940 है। इससे यह दृष्टिगोचर हो रहा है कि नगरीय क्षेत्र में लिंगानुपात की स्थिति कम हो रही है। सर्वाधिक लिंगानुपात वाला राज्य केरल (1084) व न्यूनतम लिंगानुपात वाला राज्य हरियाणा (877)। भारत का सकल लिंगानुपात 2001 में 933 था जो 2011 में 940 हो गया।

पशु, पक्षी आदिम समाज, पिछड़े हुए समाज में असमानताएँ कम होती है। शिक्षित, उच्च स्तर के समाज में असमानताएं भेदभाव मिलेगा ही। असमानताओं से ही समाज, सृष्टि का विकास हुआ है। स्त्री-पुरूष, दिन-रात, सुबह-शाम, पूर्व-पश्चिम, शुभ-अशुभ, पक्ष-विपक्ष आदि विपरीत व असमान स्थिति से ही सृष्टि का विकास हुआ है। व्यक्ति की बौद्धिक शारीरिक संरचना, सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक स्थिति ही समान नहीं है फिर कैसे अन्य असमानता को समान किया जा सकता है। सामाजिक जीवन के स्थायित्व, प्रकार्यात्मक हेतु असमानताएं आवश्यक है।

लैंगिक (जेण्डर) मुद्दा